इकाई 11 व्यापार चक्र के पारंपरिक मॉडल*

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 व्यापार चक्रों के अभिलक्षण

11.3 व्यापार चक्रों के चरण

11.3.1 विस्तार चरण

11.3.2 अवमंदन चरण

11.4 व्यापार चक्रों के सिद्धांत

11.4.1 व्यापार चक्र पर कीन्स का दृष्टिकोण

11.4.2 सैमुएलसन का व्यापार चक्र मॉडल

11.4.3 राजनीतिक व्यापार चक्र

11.5 व्यापार चक्रों का तिथि–निर्धारण

11.6 आर्थिक संकेतक

11.6.1 अग्रणी संकेतक

11.6.2 पश्चगामी संकेतक

11.6.3 संपाती संकेतक

11.7 अनुभवजन्य विश्लेषण

11.8 सारांश

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

11.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य होंगे कि –

- व्यापार चक्र की अवधारणा और अभिलक्षणों की व्याख्या कर सकें;
- व्यापार चक्र के विभिन्न चरणों की पहचान कर सकें;
- व्यापार चक्र की घटना का वर्णन करने वाला सैद्धांतिक प्राधार सुनिश्चित कर सकें;
- व्यापार चक्र पर केन्जियन दृष्टिकोण की सराहना कर सकें;
- सैमुएलसन द्वारा दिए गए व्यापार चक्र के गुणक–त्वरक मॉडल की व्याख्या कर सकें;
- राजनीतिक व्यापार चक्र सिद्धांत की जाँच कर सकें;
- व्यापार चक्र के तिथि–निर्धारण हेतु नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च (NBER) द्वारा प्रयोग की जाने वाली पद्धति की सराहना कर सकें;तथा
- अग्रणी, पश्चगामी और संपाती संकेतकों के बीच अंतर स्पष्ट कर सकें।

* डॉ. आर्ची भाटिया, सह–आचार्य, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

11.1 प्रस्तावना

किसी देश द्वारा प्रमाणित आर्थिक विकास निर्बाध नहीं होता है; यह कई उतार–चढ़ाव से गुजरता है। इन देशों के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) स्तरों में आवधिक उतार–चढ़ाव होता रहा है। यह ध्यान देना रोचक होगा कि इस तरह का उतार–चढ़ाव केवल आर्थिक विकास तक ही सीमित नहीं रहता, यह अपने दीर्घकालिक रुझानों के आसपास आय, नियोजन एवं कीमत आदि विभिन्न आर्थिक समुच्चयों में व्याप्त हो जाता है। अधिकांश विकसित देशों ने उत्पादन व अन्य आर्थिक समुच्चयों में विस्तार एवं संकुचन के चरणों का अनुभव किया है। उतार–चढ़ाव के इन वैकल्पिक चरणों को ही व्यापार चक्रों (business cycles) के रूप में जाना जाता है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि व्यापार चक्रों का औपचारिक विश्लेषण 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ही आरंभ हो गया था। यह देखा गया कि अर्थव्यवस्था में विस्तार एवं संकुचन की अवधि नियमित रूप से होती है। इन अवधियों के अभिलक्षणों को वेस्ले मिशेल, फ्रेडरिक मिल्स और साइमन कुज्नेत्स जैसे अर्थशास्त्रियों द्वारा प्रलेखित किया गया है। मिशेल ने चक्रों पर चरों के सह–आंदोलन का प्रलेखन किया; मिल्स ने विस्तार एवं संकुचन पर कीमत व तादाद का सह–संचलन संबंधी प्रलेखन किया; तथा कुज्नेत्स ने संवृद्धि के साथ–साथ उतार–चढ़ाव के प्रतिमानों का भी अध्ययन किया।

सन 1930 का दशक व्यापार–चक्र अनुसंधान में बहुत सक्रिय काल रहा। तथापि, कीन्स के *जनरल थ्योरी* के प्रकाशन के बाद व्यापार चक्रों में रुचि कम हो गई, जिसने सबका ध्यान व्यापार चक्रों से हटाकर अर्थव्यवस्था के अल्पकालिक प्रबंधन की ओर मोड़ दिया। सन 1970 के दशक में व्यापार चक्रों में उस समयरुचि फिर से जागृत हो गई जब कई देशों में व्याप्त आर्थिक संकट को केन्जियन मॉडल से स्पष्ट नहीं किया जा सका।

11.2 व्यापार चक्रों के अभिलक्षण

व्यापार चक्र में नियोजन, उत्पादन, वास्तविक आय एवं वास्तविक बिक्री सहित अनेक आर्थिक चरों में विस्तार एवं संकुचन के आवर्ती वैकल्पिक चरण शामिल होते हैं। व्यापार चक्र में बहुआयामी प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं, जिनमें परिमाण एवं मूल्य, स्टॉक एवं प्रवाह, उत्पादन एवं निवेश तथा वास्तविक, मौद्रिक एवं वित्तीय चर सभी एक साथ चलते हैं। ये इस अर्थ में असममित होते हैं कि विस्तार विशिष्ट रूप से आकार एवं अवधि में संकुचन से अधिक होता है। व्यापार चक्रों को अन्य उतार–चढ़ावों से अलग पहचाना जा सकता है क्योंकि वे सामान्यतः वृहत्तर, दीर्घतर एवं व्यापक रूप से विस्तीर्ण होते हैं।

व्यापार चक्रों के प्रमुख अभिलक्षण इस प्रकार हैं –

1) यद्यपि विभिन्न व्यापार चक्र एक समान नियमितता नहीं दर्शाते हैं, उनके कुछ विशिष्ट चरण होते हैं, यथा विस्तार, अवमंदन (recession), अवसाद (depression) और समुत्थान। व्यापार चक्र की अवधि दो वर्ष से बारह वर्ष तक कुछ भी हो सकती है।
2) व्यापार चक्र *तुल्यकालिक* होते हैं। अवमंदन या संकुचन अर्थव्यवस्था के अधिकांश उद्योगों या क्षेत्रों में एक साथ होता है। अवमंदन अर्थात् मंदी एक उद्योग से दूसरे उद्योग में जाती है और यह शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि पूरी अर्थव्यवस्था मंदी की चपेट में न आ जाए। इसी प्रकार, समृद्धि उद्योगों या क्षेत्रों के बीच निवेश–उत्पादन संबंधों अथवा माँग संबंधों की विभिन्न कड़ियों से फैलती है।

3) उत्पादन स्तर के साथ–साथ नियोजन, निवेश, उपभोग, ब्याज दर, मूल्य स्तर आदि में भी उतार–चढ़ाव एक साथ होते हैं।
4) टिकाऊ वस्तुओं का उपभोग एवं निवेश चक्रीय उतार–चढ़ाव से सबसे अधिक प्रभावित होता है। जैसा कि कीन्स द्वारा जोर देकर कहा गया है, निवेश बहुत अस्थिर होता है क्योंकि वह निजी उद्यमियों की लाभ अपेक्षाओं पर निर्भर करता है। इन अपेक्षाओं में कोई भी बदलाव निवेश को अस्थिर बना देता है। इस प्रकार, टिकाऊ घरेलू प्रभावों के मामले में उतार–चढ़ाव का आयाम सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में अधिक होता है।
5) किसी व्यापार चक्र के विभिन्न चरणों के दौरान गैर–टिकाऊ वस्तुओं और सेवाओं की खपत में अधिक अंतर नहीं होता है। व्यापार चक्रों के पिछले आँकड़ों से पता चलता है कि परिवारों में गैर–टिकाऊ वस्तुओं की खपत में काफी स्थिरता बनी हुई थी। तदनुसार, गैर–टिकाऊ उपभोग वस्तुओं के मामले में उतार–चढ़ाव की अधिकता सकल घरेलू उत्पाद की अधिकता की तुलना में कम होती है।
6) अवमंदन या विस्तार का तत्काल प्रभाव वस्तुओं के स्टॉक पर पड़ता है। जब मंदी आती है तो मालसूची वांछित स्तर से अधिक बड़ी होने लगती है। यह वस्तुओं के उत्पादन में कटौती की ओर प्रवृत्त करता है। इसके विपरीत, जब समुत्थान शुरू होता है तो कुल माँग बढ़ जाती है और मालसूची वांछित स्तर से नीचे चली जाती है। यह व्यापारिक घरानों को वस्तुओं के लिए और अधिक ऑर्डर देने के लिए प्रोत्साहित करता है, जो कि उत्पादन में वृद्धि करता है और निवेश को प्रोत्साहित करता है।
7) लाभ में अन्य प्रकार की आय की तुलना में अधिक उतार–चढ़ाव होता है क्योंकि व्यापार चक्र व्यवसायियों के लिए अनिश्चितता का कारण बनता है और आर्थिक स्थितियों का पूर्वानुमान लगाना कठिन बना देता है। अवसाद के दौरान लाभ ऋणात्मक हो जाता है और कई व्यवसायी दिवालिया हो जाते हैं।
8) व्यापार चक्र अपनी प्रकृति में अंतर्राष्ट्रीय होते हैं अर्थात् एक बार एक देश में शुरू होने के बाद ये छूत के प्रभाव से दूसरे देशों में फैल जाते हैं। एक देश में वित्तीय बाजारों में गिरावट, उदाहरण के लिए, तेजी से दूसरे देशों में फैल जाती है क्योंकि वित्तीय बाजार पूँजी प्रवाह के माध्यम से विश्व स्तर पर जुड़े होते हैं।

इसके अलावा, एक देश में मंदी, मान लीजिए अमेरिका में, दूसरे देशों में फैल सकती है क्योंकि अमेरिका के आयात में गिरावट आएगी। वे देश जो अमेरिका के प्रमुख निर्यातक हैं, उनके निर्यात में गिरावट देखी जाएगी और फिर वहाँ मंदी भी देखी जा सकती है।

11.3 व्यापार चक्रों के चरण

व्यापार चक्र एक अवधि में आर्थिक चरों के विस्तार और अगली ही अवधि में संकुचन से पहचाने जाते हैं। आमतौर पर व्यापार चक्र के चार चरण होते हैं, यथा विस्तार, अवमंदन, अवसाद और समुत्थान। एक व्यापार चक्र के इन चार चरणों को चित्र 11.1 में दर्शाया गया है। इस चित्र में ऊर्ध्वमुखीऋजु रेखा स्थिर अवस्था विकास पथ या सकल घरेलू उत्पाद के दीर्घकालीन विकास पथ को इंगित करती है।

व्यापार चक्रों के कारण सकल घरेलू उत्पाद स्थिर अवस्था विकास पथ के आसपास ही घट–बढ़ करता है। विस्तार चरण में विकास दर में तेजी दिखाई पड़ती है, जबकि मंदी के चरण में विकास दर में गिरावट आती है। मंदी के चरण में आर्थिक विकास अपने दीर्घकालिक रुझान से नीचे होता है और अर्थव्यवस्था में ऋणात्मक विकास दर भी देखी

जा सकती है। वस्तुतः, किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए नकारात्मक विकास कोई दुर्लभ घटना नहीं होती।

वर्ष 2019 में कई देशों (उदाहरण के लिए, वेनेजुएला, अर्जेंटीना और तुर्की) में नकारात्मक आर्थिक विकास देखा गया। अवमंदन और अवसाद के बीच का अंतर कोटि एवं विस्तार संबंधी अंतर ही होता है। इसी प्रकार, समुत्थान और विस्तार के बीच का अंतर कोटि एवं विस्तार संबंधी अंतर ही होता है।

नकारात्मक संवृद्धि के बाद अर्थव्यवस्था समुत्थान चरण और फिर विस्तार चरण से गुजरती है। वह बिंदु जहाँ कोई विस्तार समाप्त होता है और कोई मंदी शुरू होती है, व्यापार चक्र का 'उत्कर्ष' कहलाता है। वह बिंदु जहाँ कोई अवसाद समाप्त होता है और समुत्थान शुरू होता है, व्यापार चक्र का 'गर्त' कहलाता है। इस प्रकार, उत्कर्ष और गर्त किसी भी व्यापार चक्र में महत्वपूर्ण मोड़ होते हैं।

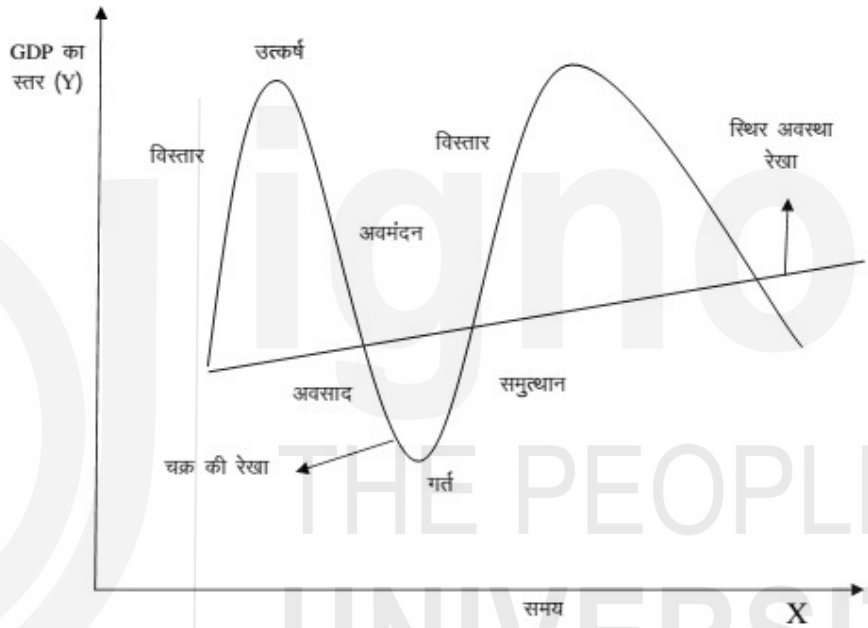

चित्र 11.1: व्यापार चक्र के चरण

11.3.1 विस्तार चरण

व्यापार चक्र के विस्तार चरण में उत्पादन, नियोजन, निष्पाद, वेतन, लाभ, उत्पादों की माँग एवं आपूर्ति, बिक्री आदि विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होती है। कोई विस्तार चरण अनेक दबावों के परिणामस्वरूप शुरू हो सकता है, जिनमें वित्तीय संस्थानों की अधिक ऋण देने की इच्छा और व्यापारिक घरानों की अधिक ऋण लेने की इच्छा भी शामिल हैं। अर्थव्यवस्था में समग्र आशावाद देखा जाता है। यह विस्तार का चरण तब तक जारी रहता है जब तक कि आर्थिक वातावरण अनुकूल न हो जाए।

विस्तार के चरण के दौरान अर्थव्यवस्था प्रायः इस अर्थ में अतितप्त हो जाती है कि उसमें विभिन्न प्रकार के व्यवधान और संघर्ष जन्म लेने लगते हैं। वेतन दर और कीमतें उत्पादन की तुलना में बहुत तेजी से बढ़ती हैं, जिससे उत्पादन लागत में वृद्धि होती है और लाभ में गिरावट आती है। केंद्रीय बैंक कोई प्रतिबंधात्मक मौद्रिक नीति भी अपना लेता है ताकि मुद्रास्फीति नियंत्रण में रहे। विस्तार चरण में आर्थिक विकास अंततः धीमा हो जाता है और अपने चरम पर पहुँच जाता है। किसी भी व्यापार चक्र के उत्कर्ष पर होने दौरान उत्पादन,

लाभ, बिक्री एवं नियोजन जैसे आर्थिक चर ऊँचाई पर तो होते हैं मगर फिर गतिवृद्धि नहीं करते। निवेश मूल्य में वृद्धि के कारण विभिन्न आगतों की माँग में धीरे–धीरे कमी आने लगती है। निवेश मूल्यों में वृद्धि से उत्पाद की कीमतों में वृद्धि होती है, जबकि लोगों की वास्तविक आय आनुपातिक रूप से नहीं बढ़ती है।

यह उपभोक्ताओं को अपने मासिक बजट का पुनर्गठन करने के लिए प्रेरित करता है और उत्पादों, विशेष रूप से विलासिता एवं उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की माँग गिरने लगती है। उत्कर्ष भी विभिन्न आर्थिक संकेतकों से पहले दिखाई देता है, जैसे कि खुदरा बिक्री और नियोजित लोगों की संख्या गिरती है।

जब उत्पादों की माँग में गिरावट तीव्र और स्थिर हो जाती है तो 'मंदी का दौर' शुरू हो जाता है।

11.3.2 अवमंदन चरण

अवमंदन अर्थात् मंदी के चरण में उत्पादन, कीमतें, बचत, निवेश आदि सभी आर्थिक चर जैसे घटने लगते हैं। आमतौर पर मंदी की शुरुआत में उत्पादकों को अपने उत्पादों की माँग में कमी के बारे में पता नहीं होता है और वे वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन जारी रखते हैं। ऐसे मामले में आपूर्ति माँग से अधिक हो जाती है और माल–सूचियों का संचय होने लगता है।

कालांतर में उत्पादकों को एहसास होता है कि माल–सूची का अवांछित संचय हो गया है, उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है और लाम में गिरावट आई है। ऐसी स्थिति पहले कुछ उद्योगों द्वारा अनुभव की जाती है और फिर धीरे–धीरे पूरी अर्थव्यवस्था में फैल जाती है। अवमंदन के चरण के दौरान निर्माता आमतौर पर नए निवेश से बचते हैं, जिससे उत्पादन के कारकों की माँग में कमी आती है, और परिणामस्वरूप निवेश मूल्यों और नियोजन में गिरावट आती है। कंपनियाँ अपना उत्पादन स्तर घटा देती हैं और वेतन पत्रक पर लोगों की संख्या कम कर देती हैं। तब एक श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया शुरू होती है – निम्न आय, कम माँग, कम उत्पादन, कम नियोजन, कम आय, इत्यादि। अवमंदन के प्रतिकूल प्रभाव पूर्णतया आर्थिक दायरे से परे होते हैं और समाज के सामाजिक ताने–बाने को भी प्रभावित करते हैं। अवमंदन के दौरान सामाजिक अशांति और अपराध बढ़ जाते हैं।

अवमंदन के चरण में वास्तविक उत्पादन संभावित उत्पादन से कम हो सकता है, जिससे सकारात्मक उत्पादन अंतराल का संकेत मिलता है। जब अवमंदन आगे भी जारी रहता है तो आर्थिक विकास दर नकारात्मक भी हो सकती है। ऐसे मामलों में विकास दर में गिरावट ही नहीं होती बल्कि सकल घरेलू उत्पाद का यथार्थ स्तर भी गिर जाता है। जैसे–जैसे बिक्री घटती है, व्यावसायिक घरानों के लिए अपना ऋण चुकाना दुष्कर होता जाता है। चूँकि नए निवेश करने के लिए व्यापार भावनाएँ काफी कम होती हैं, ऋण की माँग में गिरावट आ जाती है। बैंक भी अपने ऋणदान में सतर्कता बरतने लगते हैं क्योंकि ऋण चुकाने पर बकाया की संभावना बढ़ जाती है।

अर्थव्यवस्था, बहरहाल, समय के साथ अपनी विकास दर को पुनर्जीवित करती है और अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में आशावाद का निर्माण होता है। यह अवमंदन के चरण के उत्क्रमण की ओर ले जाता है और 'समुत्थान चरण' शुरू होता है। व्यक्ति और संगठन निवेश, नियोजन, उत्पादन आदि विभिन्न आर्थिक कारकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना शुरू कर देते हैं।

समुत्थान चरण में उपभोक्ता व्यय और उपभोक्ता वस्तुओं की माँग में वृद्धि देखी जाती है। यह फर्मों को उत्पादन बढ़ाने, नए निवेश करने आदि के लिए प्रोत्साहन प्रदान करता है।

इसके अलावा, अप्रचलित मशीनरी के प्रतिस्थापन और वर्तमान पूँजीगत स्टॉक के अनुरक्षण के कारण अवमंदन के चरण में कुछ निवेश हो सकता है। मूल्य तंत्र अर्थव्यवस्था के समुत्थान चरण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जैसा कि पहले बताया गया है, अवमंदन के चरण में निवेश मूल्यों में गिरावट उत्पाद की कीमतों में गिरावट से अधिक होती है। इससे उत्पादन लागत में कमी और लाभ में वृद्धि होती है। इसके अलावा, समुत्थान चरण में कुछ मूल्यह्रासित पूँजीगत वस्तुओं को उत्पादकों द्वारा बदल दिया जाता है और कुछ का उनके द्वारा रखरखाव किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप संस्थानों द्वारा निवेश और नियोजन में वृद्धि कर दी जाती है। जैसे ही यह प्रक्रिया गति पकड़ती है, अर्थव्यवस्था फिर से विस्तार के चरण में प्रवेश करती है। इस प्रकार, एक व्यापार चक्र पूरा हो जाता है।

बोध प्रश्न 1

1) व्यापार चक्र का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

.....

2) व्यापार चक्र के महत्वपूर्ण अभिलक्षणों की सूची प्रस्तुत करें।

.....

.....

.....

.....

3) व्यापार चक्र के विभिन्न चरणों का वर्णन करें?

.....

.....

.....

.....

11.4 व्यापार चक्रों के सिद्धांत

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि व्यापार चक्र किस कारण उत्पन्न होते हैं। व्यापार चक्र संबंधी अनेक सिद्धांत समय–समय पर प्रतिपादित किए जाते रहे हैं। इनमें से प्रत्येक सिद्धांत ऐसे भिन्न–भिन्न कारक बताता है जो व्यापार चक्र का कारण बनते हैं।

11.4.1 व्यापार चक्र पर कीन्स का दृष्टिकोण

कीन्स ने अपने मौलिक कार्य 'जनरल थ्योरी ऑफ एम्प्लॉयमेंट, इंटरेस्ट एंड मनी' में व्यापार चक्रों के कारण संबंधी विश्लेषण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कीन्स के अनुसार, कुल

प्रभावी माँग के स्तर में परिवर्तन आय के स्तर में उतार–चढ़ाव लाएगा। कुल माँग में उपभोग वस्तुओं की माँग और निवेश वस्तुओं की माँग शामिल होती है, जबकि अल्पावधि में न्यूनाधिक स्थिर रहते हुए उपभोग करने की प्रवृत्ति कुल माँग में उतार–चढ़ाव, मुख्यतः निवेश की माँग में उतार–चढ़ाव, पर निर्भर करती है।

गुणक निवेश में कमी या वृद्धि के बाद आय में आवर्धित परिवर्तन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तथापि, यह सिद्धांत व्यापार चक्र के संचयी चरित्र की व्याख्या करने में विफल रहता है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि निवेश में 100 रुपये की वृद्धि होती है और गुणक का परिमाण 4 है।

गुणक के सिद्धांत से, हम जानते हैं कि राष्ट्रीय आय में 400 की वृद्धि होगी और यदि गुणक ही वह एकमात्र सक्रिय कार्यबल है तो अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीय आय के उच्चतर स्तर पर एक नयी स्थिर साम्यावस्था तक पहुँचने के साथ ही बात यहाँ समाप्त हो जाती है। किंतु वास्तविक जीवन में ऐसा होने की संभावना नहीं होती है क्योंकि निवेश में की गई वृद्धि से उत्पन्न आय में वृद्धि से अर्थव्यवस्था पर और अधिक प्रतिघात होगा। यह प्रतिक्रिया त्वरक के सिद्धांत में वर्णित है।

सैमुएलसन ने त्वरक सिद्धांत को गुणक के साथ जोड़ा और दर्शाया कि दोनों के बीच अंतर्क्रिया आर्थिक गतिविधियों में चक्रीय उतार–चढ़ाव ला सकती है।

11.4.2 सैमुएलसन का व्यापार चक्र मॉडल : गुणक और त्वरक के बीच अंतर्क्रिया

सैमुएलसन ने अपने मौलिक शोधपत्र में दृढ़तापूर्वक दर्शाया कि निवेश के स्तर में कोई भी स्वायत्त वृद्धि गुणक के मान के आधार पर किसी बढ़ी हुई राशि तक आय बढ़ा देती है। आय में यह वृद्धि त्वरण प्रभाव के माध्यम से निवेश में वृद्धि को और प्रेरित करती है। आय में वृद्धि से वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल माँग में वृद्धि होती है। अधिक वस्तुओं के उत्पादन के लिए हमें अधिक पूँजीगत वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिसके लिए अतिरिक्त निवेश किया जाता है। इस प्रकार, निवेश और आय के बीच का संबंध परस्पर अंतर्क्रिया का होता है; निवेश आय को प्रभावित करता है जो बदले में निवेश की माँग को प्रभावित करता है और इस प्रक्रिया में आय व नियोजन में चक्रीय तरीके से उतार–चढ़ाव होता है।

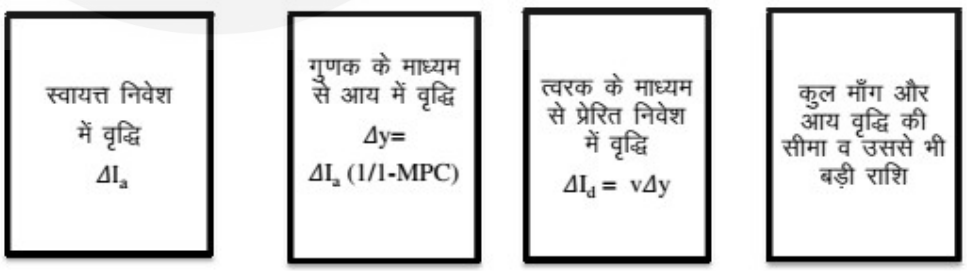

चित्र 11.2 दर्शाता है कि जब किसी त्वरक को केन्जियन गुणक के साथ जोड़ा जाता है तो आय एवं उत्पादन में और भी अधिक वृद्धि होती है।

ΔI_a = स्वायत्त निवेश में वृद्धि

Δy = आय में वृद्धि

$\frac{1}{1-MPC}$ = गुणक का आकार जब MPC = सीमांत उपभोग प्रवृत्ति

ΔI_d =प्रेरित निवेश में वृद्धि

v = त्वरक का आकार

कुल माँग के किसी भी घटक में परिवर्तन एक गुणक प्रभाव उत्पन्न करते हैं, जिसका परिमाण उपभोग करने के लिए सीमांत प्रवृत्ति पर निर्भर करता है।

जब गुणक प्रभाव के फलस्वरूप उपभोग, आय एवं उत्पादन में वृद्धि होती है तो वे निवेश में और परिवर्तन को प्रेरित करते हैं और पूँजीगत वस्तु उद्योग में इस प्रेरित निवेश की सीमा पूँजी–उत्पादन अनुपात पर निर्भर करती है अर्थात् गुणक एवं त्वरक के बीच अंतर्क्रिया बिना किसी बाह्य आघात के ऐसे व्यापार चक्रों को जन्म दे सकती है जिनके प्रतिमान उपभोग एवं पूँजी–उत्पादन अनुपात की सीमांत प्रवृत्ति के परिमाण के आधार पर भिन्न–भिन्न होते हैं।

गुणक एवं त्वरक के बीच परस्पर अंतर्क्रिया के मॉडल को गणितीय रूप से निम्नानुसार दर्शाया जा सकता है –

$$Y_t = C_t + I_t \quad \ldots (11.1)$$

$$C_t = C_a + c\,(Y_{t-1}) \quad \ldots (11.2)$$

$$I_t = I_a + v\,(Y_{t-1} - Y_{t-2}) \quad \ldots (11.3)$$

जहाँ Y_t, C_t, I_t किसी अवधि t के लिए क्रमशः आय, उपभोग एवं निवेश को इंगित करता है, C_a स्वायत्त उपभोग को इंगित करता है, I_a स्वायत्त निवेश को इंगित करता है, c सीमांत उपभोग प्रवृत्ति को इंगित करता है और v पूँजी–उत्पादन अनुपात या त्वरक को इंगित करता है।

समीकरण 11.1 से हम देखते हैं कि अवधि t में उपभोग पिछली अवधि की आय Y_{t-1} का फलन है अर्थात् किसी अवधि के उपभोग निर्धारण हेतु आय के लिए एक अवधि अंतराल मानकर चला गया है, जबकि समीकरण 11.2 के अनुसार अवधि t में प्रेरित निवेश पिछली अवधि में आय में परिवर्तन का फलन है। इसका अर्थ यह है कि प्रेरित निवेश का निर्धारण करने के लिए आय में परिवर्तन हेतु दो अवधि अंतराल होते हैं।

समीकरण 11.3 में प्रेरित निवेश $v\,(Y_{t-1} - Y_{t-2})$ के बराबर है। अब समीकरण 11.2 और 11.3 को समीकरण 11.1 में प्रतिस्थापित करने पर हमें समीकरण 11.4 प्राप्त होता है, यथा –

$$Y_t = C_a + c(Y_{t-1}) + I_a + v\,(Y_{t-1} - Y_{t-2}) \quad \ldots (11.4)$$

यह समीकरण दर्शाता है कि आय में परिवर्तन कैसे सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (c) और पूँजी–उत्पादन अनुपात (v) या त्वरक के मूल्यों पर निर्भर करता है।

स्थिर साम्यावस्था में आय के स्तर को निम्नवत् लिखा जा सकता है –

$$Y = C_a + cY + I \quad \ldots (11.5)$$

ऐसा इस तथ्य के कारण है कि स्थिर साम्यावस्था में निर्धारक कारकों के आँकड़ों को देखते हुए आय का संतुलन स्तर अपरिवर्तित रहता है। तदनुसार, इस उदाहरण मेंप्राप्त होताहै –

$Y_t = Y_{t-1} = Y_{t-2} = Y_{t-n}$

जिससे अवधि अंतराल का कोई प्रभाव नहीं होता और त्वरक Y_{t-1} - Y_{t-2}=0के रूप में शून्य हो जाता है।

इस प्रकार, किसी गत्यात्मक स्थिति में जब स्वायत्त निवेश में परिवर्तन होता है तो समीकरण 11.4 उस पथ का वर्णन करता है जिसका कोई असाम्यावस्था प्रणाली या तो अंतिम साम्यावस्था तक पहुँचने या फिर उससे दूर चले जाने के लिए अनुसरण करती है। किंतु अर्थव्यवस्था किसी नयी साम्यावस्था की ओर बढ़ती है या फिर उससे विचलित होती है, यह सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और पूँजी–उत्पादन अनुपात के मानों पर निर्भर करता है।

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और पूँजी–उत्पादन अनुपात के मानों के विभिन्न संयोजन लेते हुए सैमुएलसन ने ऐसे विभिन्न पथ बताए हैं जिनका अर्थव्यवस्था अनुसरण करेगी। सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और पूँजी–उत्पादन अनुपात के मानों के विभिन्न संयोजनों को चित्र 11.3 में दिखाया गया है।

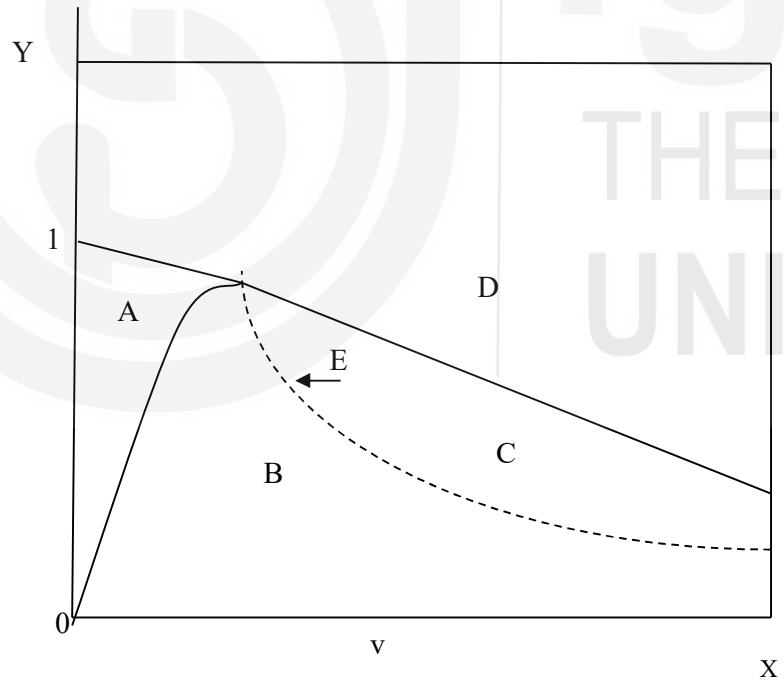

चित्र 11.3 वे चार पथ दर्शाता है जिनका आर्थिक गतिविधि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (*c*) और पूँजी–उत्पादन अनुपात (*v*) के मान संयोजनों के आधार पर अनुसरण कर सकती है।

चित्र 11.3: चर *c* और *v* का संयोजन

संचलन के वे चार पथ या प्रतिमान जिनका आर्थिक गतिविधि (जो कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद या आय से मापी जाती है) सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और पूँजी–उत्पादन अनुपात के विभिन्न मान संयोजनों के आधार पर पालन कर सकती है, चित्र 11.4 a से 11.4eमें दर्शाए गए हैं।

जब सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और पूँजी–उत्पादन अनुपात के विभिन्न मान संयोजन A अंकित क्षेत्र के भीतर होते हैं तो स्वायत्त निवेश में परिवर्तन के साथ सकल राष्ट्रीय उत्पाद या आय घटती दर पर ऊपर या नीचे की ओर बढ़ता है और अंत में एक नए स्तर पर पहुँच जाता है, जैसा कि चित्र 11.4a में दर्शाया गया है।

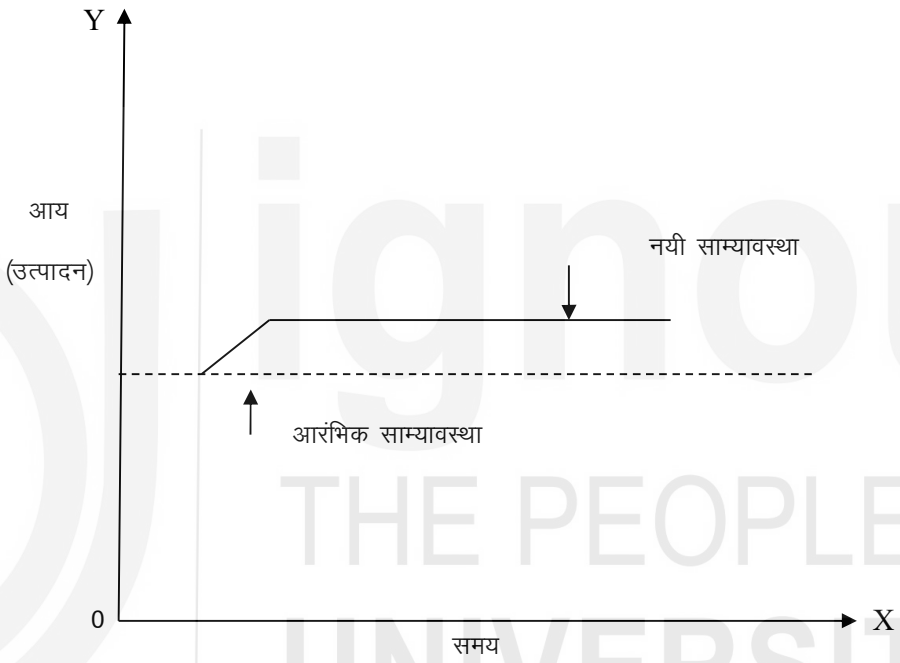

चित्र 11.4a: आय औरउत्पादन

यदि c और v के मान ऐसे हों जो क्षेत्र B के भीतर पड़ते हैं तो स्वायत्त निवेश या स्वायत्त उपभोग में परिवर्तन से आय में उतार–चढ़ाव उत्पन्न होगा, जो कि किसी ऐसी अवमंदित चक्र शृंखलाके प्रतिमान का पालन करता होगा जिसके आयाम चक्रों के लुप्त हो जाने तक घटते जाएँगे, जैसा कि चित्र 11.4b में दर्शाया गया है।

चित्र 11.3 में क्षेत्र C चर c और v के संयोजन निर्दिष्ट करता है, जो कि क्षेत्र B से अपेक्षाकृत अधिक हैं और गुणक एवं त्वरक के ऐसे मान निर्धारित करते हैं जो विस्फोटक चक्र उत्पन्न हैं, यथा क्रमिक रूप से उत्तरोत्तर अधिकाधिक आयाम के साथ आय में उतार–चढ़ाव। इस स्थिति को चित्र 11.4c में दर्शाया गया है।

क्षेत्र D चर c और v के ऐसे संयोजन प्रदान करता है जो बढ़ती हुई दर पर आय को ऊपर या नीचे ले जाने का कारण बनते हैं। यह चित्र 11.4d में दर्शाया गया है।

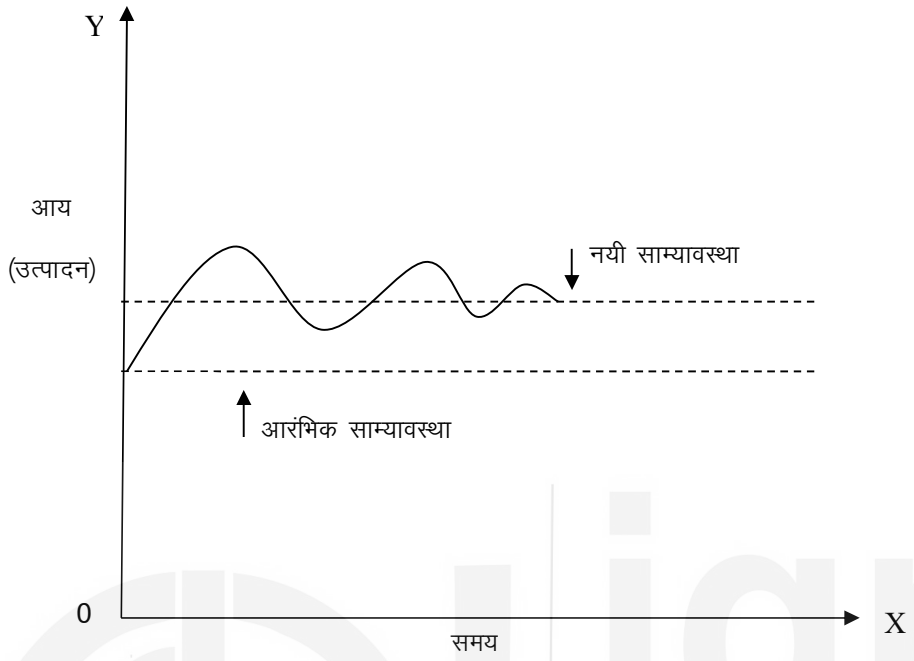

चित्र 11.4b: आय औरउत्पादन

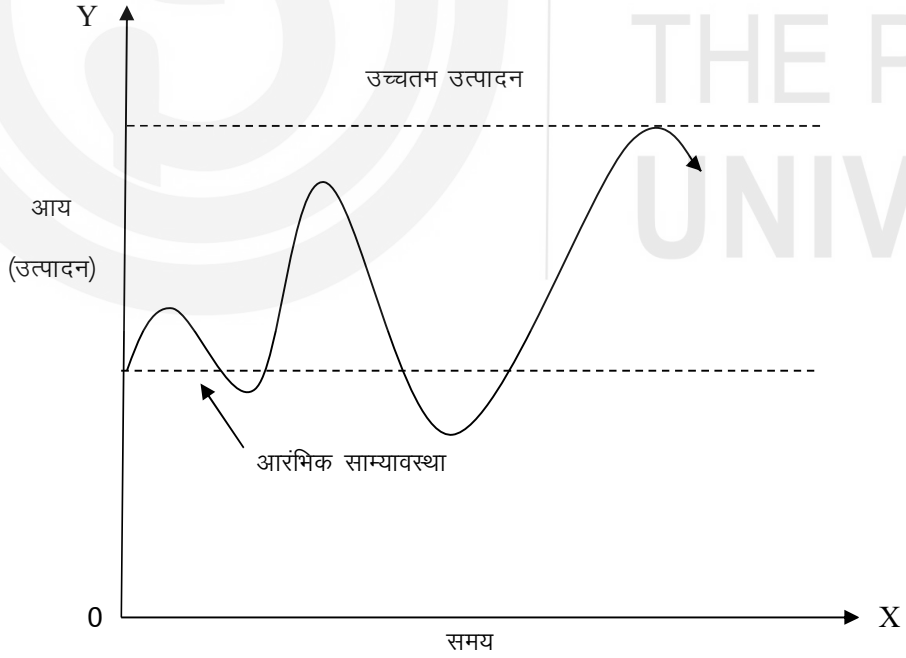

चित्र 11.4c: आय औरउत्पादन

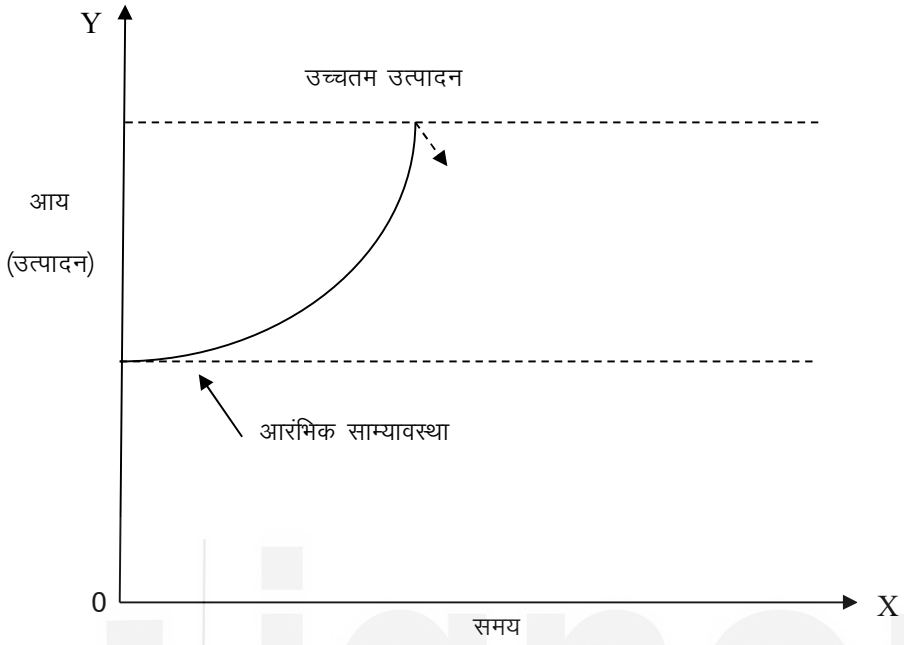

चित्र11.4d: आय और उत्पादन

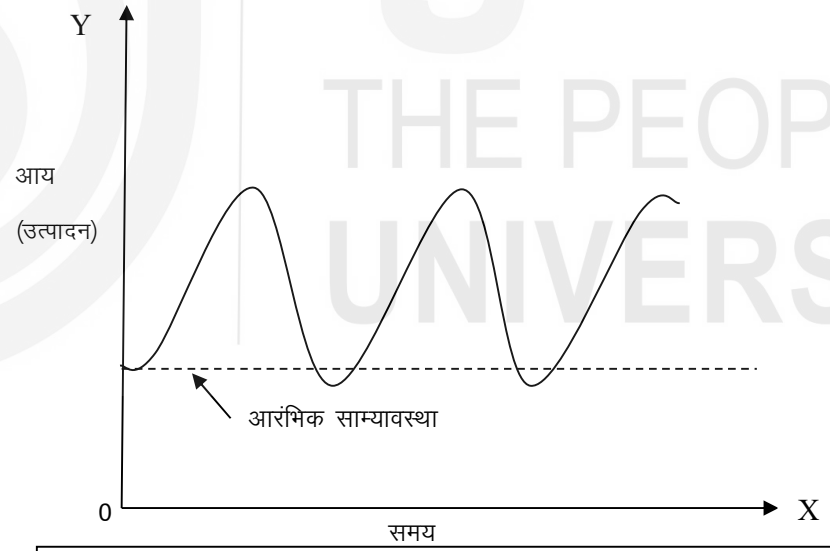

चित्र 11.4 खंड (a) से (e) चर c और v के विभिन्न मानों के लिए आय (उत्पादन) संचलन के विभिन्न प्रतिमान दर्शाता है, जो क्रमशः गुणक एवं त्वरक के परिमाण को निर्धारित करते हैं।

चित्र11.4e: आय और उत्पादन

किसी विशेष स्थिति में जब c और v के मान क्षेत्र E में अवस्थित होते हैं तो वे नियत आयाम की आय में उतार–चढ़ाव उत्पन्न करते हैं और चित्र 11.4e में दर्शाए गए हैं।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि उपर्युक्त सभी पाँच स्थितियाँ चक्रीय उतार–चढ़ाव या व्यापार चक्रों को जन्म नहीं देती हैं। यह केवल B, C और E क्षेत्रों में स्थित c और v का संयोजन ही है जो व्यापार चक्र को उत्पन्न करता है।

11.4.3 राजनीतिक व्यापार चक्र

पदबंध *राजनीतिक व्यापार चक्र* का प्रयोग मुख्य रूप से किसी चुनाव से ठीक पहले अर्थव्यवस्था के पुनः प्रवर्तन का वर्णन करने के लिए किया जाता है ताकि वर्तमान सरकार के फिर से निर्वाचित होने की संभावनाओं में सुधार हो सके। विस्तारित मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों के अल्पावधि में राजनीतिक रूप से लोकप्रिय परिणाम होते हैं, जैसे कि बेरोजगारी घटना, आर्थिक संवृद्धि और सार्वजनिक सेवाओं पर राजकीय व्यय से हितलाभ।

तथापि, समान नीतियों, विशेष रूप से यदि अत्यधिक अपनाई जाती हैं तो दीर्घ अवधि में अप्रिय परिणाम देने वाली सिद्ध होती हैं, जैसे कि मुद्रास्फीति में तेजी ले आना और विदेश व्यापार संतुलन को हानि पहुँचाना। इस प्रकार, वे अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक विकास क्षमता को क्षति पहुँचा सकते हैं।

सरकारें चुनाव से ठीक पहले किसी छोटे संस्तर के लिए लोकप्रिय विस्तारवादी मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों को आगे बढ़ाना पसंद करती हैं। बहरहाल, इसके प्रतिकूल प्रभावों से अवगत होने के कारण वे चुने जाने के बाद उन उपायों को जारी नहीं रखते हैं।

तदनुसार, चुनाव समाप्त होने के बाद सरकार प्रायः पहले के फैसलों को उलट देती है, जिसमें खर्च में कटौती, मुद्रा आपूर्ति की वृद्धि को धीमा करना और ब्याज दरों में वृद्धि की अनुमति शामिल हो सकते हैं। परिणामतः चुनाव के नियमित आयोजन से चुनाव के समय में एक कृत्रिम उत्कर्ष लाने के लिए सरकारी प्रोत्साहन एवं संयम के आवर्ती प्रतिमानों के कारण आर्थिक गतिविधि में चक्रीय उतार–चढ़ाव होगा।

11.5 व्यापार चक्रों का तिथि–निर्धारण

व्यापार चक्रों के प्रभाव, विशेष रूप से गिरावट, को निष्क्रिय करना समष्टि–अर्थशास्त्रीय नीति का एक प्रमुख उद्देश्य होता है। स्थिरीकरण हेतु उचित रूपरेखा तैयार करने के लिए व्यापार चक्रों के अवमंदन और विस्तार को समझना आवश्यक होगा। इसके लिए व्यापार चक्र के वर्तन बिन्दुओं के कालक्रम की पहचान करने की आवश्यकता होती है। अमेरिका में नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च (NBER) व्यापार चक्र के वर्तन बिन्दुओं की तिथियों की पहचान करने के लिए एक समर्पित शोध कार्यक्रम चलाता है। इसी प्रकार सेंटर फॉर इकोनॉमिक पॉलिसी रिसर्च (CEPR) यूरो एरिया बिजनेस साइकिल डेटिंग कमेटी यूरो क्षेत्र के सदस्य देशों के अवमंदन एवं विस्तार का कालक्रम निर्धारित करती है। भारत में भी व्यापार चक्रों का कालक्रम निर्धारित करने के लिए कुछ प्रयास किए गए हैं।

उक्त ब्यूरो (NBER) की व्यापार चक्र डेटिंग समिति अमेरिकी व्यापार चक्र के कालक्रम का रखरखाव करती है। कालक्रम में आर्थिक गतिविधियों के उत्कर्ष एवं गर्त संबंधी वैकल्पिक तिथियाँ शामिल होती हैं। कोई भी मंदी किसी उत्कर्ष और गर्त के बीच की अवधि होती है, जबकि विस्तार किसी गर्त और उत्कर्ष के बीच की अवधि होता है। यह ब्यूरो किसी मंदी को वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट के लगातार दो तिमाहियों के संदर्भ में परिभाषित नहीं करता है।

अधिक उचित रूप से, मंदी अर्थव्यवस्था में फैली आर्थिक गतिविधियों में एक महत्वपूर्ण गिरावट है, जो कुछ महीनों से अधिक समय तक चलती है, और सामान्यतया वास्तविक जीडीपी, वास्तविक आय, नियोजन, औद्योगिक उत्पादन एवं थोक–खुदरा बिक्री में दिखाई

देती है। इसी प्रकार, किसी विस्तार के दौरान आर्थिक गतिविधि काफी बढ़ जाती है, अर्थव्यवस्था में फैल जाती है, और आमतौर पर कई सालों तक चलती है। इस प्रकार, उक्त ब्यूरो (NBER) के दृष्टिकोण ने बड़ी संख्या में आर्थिक समय–शृंखलाके स्तरों में विस्तार एवं संकुचन के वैकल्पिक चरणों के आवर्ती अनुक्रमों के रूप में चक्रों की पहचान की। यह कारगर परिभाषा अपने वर्तमान रूप में उक्त ब्यूरो (NBER) में पचास वर्षों से अधिक समय से उपयोग में है और वर्तमान में ब्यूरो द्वारा अमेरिकी व्यापार चक्र की पहचान करने और तिथिकरण करने के लिए अपनाई जाती है। ये तिथियाँ शासकीय, शैक्षिक एवं व्यापारिक विश्लेषकों द्वारा व्यापक रूप से स्वीकार की जाती हैं। इस परिभाषा ने इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी के साथ–साथ अमेरिका के लिए भी उक्त ब्यूरो (NBER) के पूर्व–द्वितीय विश्वयुद्ध व्यापार–चक्र कालक्रम के आधार के रूप में कार्य किया।

अवमंदन और विस्तार दोनों ही स्थितियों में आर्थिक गतिविधियाँ संक्षिप्त उलटफेर दर्शा सकती हैं – किसी मंदी में विस्तार की एक छोटी अवधि के बाद और गिरावट शामिल हो सकती हैय किसी विस्तार में संकुचन की एक ऐसी छोटी अवधि शामिल हो सकती है जिसके बाद आगे की वृद्धि हो सकती है।

उक्त ब्यूरो (NBER) की व्यापार–चक्र तिथि–निर्धारण समिति अपने निर्णय को अवमंदन और विस्तार की उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर लागू करती है और इन उतार–चढ़ावों को निर्धारित करने के लिए कोई निर्धारित नियम नहीं करती। समिति के पास आर्थिक गतिविधि की कोई निर्धारित परिभाषा भी नहीं है। यह व्यापक गतिविधि के विभिन्न मापदंडों के व्यवहार की जाँच एवं तुलना करती है – वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद को उत्पाद एवं आय पक्षों, अर्थव्यवस्था–व्यापी नियोजन और वास्तविक आय पर मापा जाता है। समिति उन संकेतकों पर भी विचार कर सकती है जो संपूर्ण अर्थव्यवस्था को लेकर नहीं चलते हैं, जैसे कि वास्तविक बिक्री और फेडरल रिजर्व का औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)।

11.6 आर्थिक संकेतक

समष्टि–अर्थशास्त्रीय नीति के उद्देश्यों में काफी लंबे समय से इन दो स्थितियों से बचाव शामिल है – दीर्घकालीन अवमंदन, जिसमें संसाधन अल्प–प्रयुक्त रह जाते हैं, तथा अस्थिर विकास की अवधि, जो कि उचित मूल्य स्थिरता को जोखिम में डालती है। इसीलिए केंद्रीय बैंक के काम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति के विषय में जानकारी एकत्र करना और यदि संभव हो तो भविष्य की आर्थिक स्थितियों का पूर्वानुमान लगाना है।

सकल घरेलू उत्पाद, बिक्री, निवेश, शेयर भाव आदि आर्थिक शृंखलाओं का प्रयोग करके वर्तमान व्यावसायिक गतिविधियों को मापने की सैद्धांतिक संकल्पना अपेक्षाकृत सरल है, तथापि इसका व्यावहारिक अनुप्रयोग कठिन है। प्रायः इन उतार–चढ़ाव वाली आर्थिक शृंखलाओं का समय प्रतिमान विविधतापूर्ण होता है। जबकि कुछ आर्थिक शृंखलाएँ किसी नियत समय पर विस्तार कर रही होती हैं, अन्य पहले ही अपने उच्चतर वर्तन बिन्दु पर पहुँच चुकी होती हैं और कुछ तो अभी भी उतार–चढ़ाव ही दर्शा रही होती हैं; कुछ एक आर्थिक गतिविधियाँ निम्नतर वर्तन बिन्दु पर भी हो सकती हैं। इस प्रकार मुद्दा यह उठता है कि इन विभिन्न व्यक्तिगत आर्थिक शृंखलाओं का उपयोग करके अर्थव्यवस्था की समग्र स्थिति को कैसे मापा जाए क्योंकि वे विविधतापूर्ण समय प्रतिमान दर्शाते हैं।

नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च (NBER) में आर्थिक संकेतकों की कल्पना मूल रूप से मिशेल और बर्न्सद्वारा की गई थी। इस उपागम के लिए आर्थिक चरों के अनुवीक्षण की आवश्यकता होती है, जो कि चक्रीय परिवर्तनों के प्रति संवेदनशील होते हैं चाहे उनका कारण कुछ भी हो।

बर्न्सऔर मिशेल ने लगभग 487 आर्थिक चरों के एक समूह का अध्ययन किया, यह देखने के लिए कि क्या चरों में वर्तन बिन्दुओं ने अमेरिकी व्यापार चक्र में लगातार नेतृत्व किया, वे संपाती रहे, या फिर वे पश्चगामी रहे। संदर्भ पुनर्प्रवर्तनों के संबंध में औसत नेतृत्व अथवा या पश्चगमन के अनुसार इकहत्तर शृंखलाओं को चुनकर क्रमबद्ध किया गया। उदाहरण के लिए, छह बार की शृंखलामें कोई औसत नेतृत्व अथवा पश्चगमन नहीं देखा गया।

औसत रूप से, अग्रणी शृंखलाएँ संदर्भ पुनर्प्रवर्तनों से एक से दस महीने आगे थीं। पश्चगामी शृंखलाएँ औसतन एक से बारह महीने पीछे थीं। वर्ष 1950 में अग्रगमन, पश्चगमन और संपात (संदर्भ) शृंखलासंबंधी अवधारणा को जी.एच. मूर द्वारा और विकसित किया गया।

कुल 801 शृंखलाओं में से उन्होंने ऐसी 21 शृंखलाओं को चुना जो अनुसारिता एवं समय–निर्धारण की परीक्षा में खरी उतरती थीं; अनुसारिता का अर्थ है – वह संगतता जिसके साथ शृंखलाव्यापार चक्रों और समय के अनुसार ही हो, उस स्थिरता के संदर्भ में जिसके साथ किसी समय शृंखलाका वर्तन बिंदु संदर्भ आँकड़ों के साथ आगे रहा है, पिछड़ा रहा है या फिर मोटे तौर पर एक ही समय में हुआ है।

तब उन शृंखलाओं का चयन किया गया जो उत्कर्ष और गर्त की स्थितियों में समयबद्ध रही थीं और फिर उन्हें तीन समूहों में वर्गीकृत किया गया था – अग्रणी, पश्चगामी और स्थूलतः संपाती।

11.6.1 अग्रणी संकेतक

अग्रणी आर्थिक संकेतक हमें यह आकलन करने में मदद करते हैं कि अर्थव्यवस्था किस दिशा में जा रही है। ये ही इंगित करते हैं कि क्या होने वाला है, जैसे कोई स्थिति विशेष वास्तव में उत्पन्न होने से पहले ही उत्कर्ष चरण से संकुचन में आ जाना। सर्वाधिक महत्वपूर्ण अग्रणी संकेतकों में से एक स्वयं शेयर बाजार ही है, जिसे S&P 500 जैसे सूचकांक से मापा जाता है। आर्थिक स्थिति अनुकूल होने से पहले ही यह बढ़ना शुरू हो जाएगा, और इससे पहले कि आर्थिक स्थिति इसमें गिरावट की माँग करे, यह घटना शुरू हो जाएगा।

एक अन्य महत्वपूर्ण अग्रणी संकेतक ब्याज दरें है। कम ब्याज ऋणदान और ऋणादान दोनों को प्रोत्साहित करता है, जो कि अर्थव्यवस्था के पक्ष में होता है। ब्याज दरों में वृद्धि से पता चलता है कि अर्थव्यवस्था अच्छा प्रदर्शन कर रही है, किंतु अंततः बढ़ती ब्याज दरें धीमी हो जाती हैं क्योंकि कम ही लोग नई परियोजनाओं को शुरू करने के लिए पैसे उधार लेते हैं।

11.6.2 पश्चगामी संकेतक

अग्रणी संकेतकों से भिन्न, पश्चगामी संकेतक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के बाद बदलते हैं। यद्यपि ये विशिष्ट रूप से हमें यह नहीं बताते हैं कि अर्थव्यवस्था किस ओर जा रही है, इनसे यह संकेत अवश्य मिलता है कि समय के साथ अर्थव्यवस्था कैसे बदलती है और तदनुसार दीर्घकालिक रुझानों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं।

पश्चगामी आर्थिक संकेतक अर्थव्यवस्था के विषय में पिछली जानकारी प्रकट करते हैं। सकल घरेलू उत्पाद का अभिप्राय यह होता है कि कोई देश कितना उत्पादन कर रहा है। जब आँकड़े संकलित किए जाते हैं और जब उन्हें जारी किया जाता है, दोनों के बीच काफी अंतराल होता है, फिर भी यह एक महत्वपूर्ण संकेतक होता है। कई लोग ऐसा मानते हैं कि यदि दो तिमाहियों में निरंतर सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट आती है तो

मंदी चल रही होती है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) जैसे अन्य संकेतकों को भी कभी–कभी पश्चगामी संकेतक माना जाता है क्योंकि वे ऐसी जानकारी प्रकट करते हैं जो अधिकांश उपभोक्ताओं के पास पहले से ही होती है।

11.6.3 संपाती संकेतक

संपाती संकेतकों का विश्लेषण (न्यूनाधिक) सामान्य आर्थिक स्थितियों के समानांतर किया जाता है और इस कारण ये अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति को दर्शाते हैं। ये उपभोक्ताओं, शक्तिशाली उद्योगपतियों और नीति–निर्माताओं को इस विषय में सुझाव देते हैं कि वर्तमान में अर्थव्यवस्था अभी कहाँ है। आज जब अर्थव्यवस्था ऊपर उठ रही है तो अभी संपाती संकेतक भी बढ़ रहे हैं। साथ ही, आज जब अर्थव्यवस्था में गिरावट आ रही है तो अब ही संपाती संकेतक भी घट रहे हैं। संपाती संकेतकों के विशिष्ट उदाहरण औद्योगिक उत्पादन या कुल बिक्री से मिलते हैं।

उक्त तीनों प्रकार के संकेतक, यथा अग्रणी संकेतक, पश्चगामी संकेतक और संपाती संकेतक तालिका 11.1 में निवेश, उपभोग, नियोजन, मूल्य और मुद्रा नामक पाँच श्रेणियों के अंतर्गत प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 11.1: व्यापार चक्र के संकेतक

अग्रणी संकेतक	**स्थूलतः संपाती संकेतक**	**पश्चगामी संकेतक**
I. अचल पूँजी और निवेश सूचियों में निवेश		
नयी बिल्डिंग परमिट; आवास शुरू होता है; आवासीय नियत निवेश; नयी व्यापार संरचना; नयी पूँजी विनियोग;संयंत्र एवं उपकरण के लिए संविदाएँ और क्रय–आदेश; व्यापार निवेश–सूचियों में परिवर्तन	व्यापार का उत्पादन उपकरण; यंत्रावली और उपकरण बिक्री	पूँजी का बकाया विनियोग;नए संयंत्र एवं उपकरण के लिए व्यापार व्यय; और व्यापार निवेश–सूचियाँ
II. उपभोग, व्यापार, ऑर्डर और डिलीवरी		
उपभोक्ता वस्तुओं और सामग्री के लिए नए आदेश;अधूरे ऑर्डर में बदलाव, टिकाऊ वस्तुएँ; विक्रेता का कार्य–प्रदर्शन (डिलीवरी की गति); उपभोक्ता भावना का सूचकांक	उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन; और व्यापार बिक्री	
III. नियोजन, उत्पादन और आय		
औसत कार्य–सप्ताह; ओवरटाइम के घंटे; परिग्रहण दर छँटनी दर; नए बेरोजगारी बीमा दावे; उत्पादकता (प्रति घंटे उत्पादन);क्षमता उपयोगिता दर	गैर–कृषि नियोजन; बेरोजगारी की दर; सकल राष्ट्रीय उत्पाद; व्यक्तिगत आय; औद्योगिक उत्पादन	बेरोजगारी की औसत अवधि; लंबी अवधि की बेरोजगारी
IV. मूल्य, लागत और लाभ		
ऋणपत्र मूल्य; शेयर भावय संवेदनशील सामग्री का मूल्य; लाभ–सीमा; कुल कॉर्पोरेट लाभ; निवल नकदी प्रवाह		इकाई श्रम लागत; राष्ट्रीय आय में श्रम का हिस्सा
V. मुद्रा, ऋण और ब्याज		
मौद्रिक विकास दर; चलनिधि में परिवर्तन; उपभोक्ता ऋण में परिवर्तन; कुल निजी ऋणदान; वास्तविक मुद्रा की आपूर्ति	मुद्रा का संवेग	अल्पकालिक ब्याज दरें; बांड आय;उपभोक्ता ऋण बकाया; वाणिज्यिक एवं औद्योगिक ऋण बकाया

नोट : आँकड़ों का चयन अमेरिकी वाणिज्य विभाग के आर्थिक विश्लेषण ब्यूरो की मासिक रिपोर्ट *बिजनेस कंडीशंस डाइजेस्ट* में प्रकाशित अमेरिकी संकेतकों पर आधारित है।

11.7 अनुभवजन्य विश्लेषण

व्यापार चक्रों का अध्ययन करते समय शोधकर्ताओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। प्रमुख चुनौतियों में से एक आर्थिक आँकड़ों के जटिल अभिलक्षणों को निर्दिष्ट करने की समस्या है। कुज्नेत्स, मिशेल, बर्न्सव अन्य कई लोगों ने लंबी अवधि के पथ के चारों ओर चर के उतार–चढ़ाव का अध्ययन करने के लिए विभिन्न तकनीकों (यथा मूविंग एवरेज, टुकड़ावार रुझान आदि) का प्रयोग किया। जैसा कि हम जानते हैं, आँकड़ों के विश्लेषण की विभिन्न तकनीकें हैं। बहरहाल, इन घटकों को निर्दिष्ट करने का कोई एक सही तरीका नहीं है।

उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान शोधकर्ताओं ने व्यापार चक्र की व्याख्या करने के लिए कृषि उत्पादन जैसे वास्तविक चरों पर ध्यान केंद्रित किया। क्लासिकल अर्थशास्त्रियों ने पूर्णतः प्रतिस्पर्धी बाजारों और कीमतों एवं वेतन दरों में लचीलापन ग्रहण कियाय तदनुसार उन्होंने व्यापार चक्र की संभावना से इंकार कर दिया। उनके अनुसार मुद्रा अपने प्रभाव में तटस्थ थी। बाद में, बीसवीं शताब्दी के दौरान अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा आपूर्ति जैसे मौद्रिक चर, ब्याज दरें और कीमतें आदि महत्वपूर्ण चरों को व्यापार चक्र उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी ठहराया।

डी.के. बैकस एवं पी.जे. केहो ने लर्ष 1922 में अपने अध्ययन में ''इंटरनेशनल एविडेंस ऑन द हिस्टोरिकल प्रॉपर्टीज ऑफ बिजनेस साइकिल्स'' शीर्षक से व्यापार चक्र के विश्लेषण के लिए सकल घरेलू उत्पाद के अलावा स्थूल चरों का एक समूह भी लिया। उन्होंने दस देशों, यथा ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, डेनमार्क, जर्मनी, इटली, जापान, नॉर्वे, स्वीडन, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका में निजी उपभोग व्यय, नियत निवेश, सरकारी खरीद और निवल निर्यात के चक्रीय व्यवहार की जाँच की। वे वास्तविक परिमाणों के चक्रीय व्यवहार में काफी नियमितता पाते हैं। बहरहाल, सभी चरों में भिन्नता के प्रतिमान समान नहीं होते हैं।

उत्पादन में उतार–चढ़ाव का परिमाण देश और काल के साथ बदलता रहता है। इसके अलावा, समष्टि–आर्थिक चरों के बीच संबंध उल्लेखनीय रूप से स्थिर होते हैं। उदाहरण के लिए, निवेश उत्पादन की तुलना में लगभग 2 से 4 गुना अधिक अस्थिर होता है, जबकि उपभोग में भिन्नता उत्पादन में भिन्नता के लगभग बराबर होती है। निवेश और उपभोग दोनों ही सशक्त चक्र–समर्थक होते हैं। व्यापार संतुलन सामान्यतया प्रतिचक्रीय होता है, जो अवमंदन की बजाय उत्कर्ष के दौरान बड़े घाटे का प्रदर्शन करता है। परिमाणों में इस नियमितता का अपवाद सरकारी खरीद है, जो किसी व्यवस्थित चक्रीय प्रवृत्ति को प्रदर्शित नहीं करती है।

वर्ष 2014 में आई. कॉन्स्टेंटकोपोलू और ई.जी. सिओनास ने ''हाफ ए सैंचुरी ऑफ इम्पीरिकल एविडेंस ऑफ बिजनेस साइकिल्स इन ओईसीडी कंट्रीज'' पर अपनी पुस्तक में वर्ष 1960 से 2010 की अवधि में हॉड्रिक–प्रेस्कॉट फिल्टर(H-P filter)का प्रयोग करते हुए आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD) देशों में सामान्य व्यापार चक्रों के अस्तित्व की जाँच की। परिणाम बताते हैं कि उक्त (OECD) देशों में दो अलग–अलग चक्र हैं – यूरो क्षेत्र चक्र, जिसमें जर्मनी, फ्रांस, इटली, नीदरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और बेल्जियम के व्यापार चक्र शामिल हैं, तथा विश्व चक्र, जिसमें अमेरिका, कनाडा और यूनाइटेड किंगडम के व्यापार चक्र शामिल हैं।

एक लंबे समय तक प्रचलित दृष्टिकोण यह रहा कि हमें अवलोकन किए गए आँकड़ों की विभिन्न विशेषताओं की व्याख्या करने के लिए विभिन्न सिद्धांतों की आवश्यकता होती है – किसी शृंखलामें लंबी अवधि के रुझान की व्याख्या करने के लिए विकास सिद्धांत और आँकड़ों के चक्रीय संचलन को स्पष्ट करने के लिए कोई अन्य सिद्धांत।

आधुनिक व्यापार चक्र सिद्धांत एक भिन्न प्राक्कल्पना पर आधारित है – एक ही सिद्धांत दोनों विशेषताओं को स्पष्ट करने में सक्षम होना चाहिए। शोधकर्ता आमतौर पर आँकड़ों में चक्रीय घटक का प्रतिनिधित्व करने के लिए दो प्रक्रियाओं में से एक का पालन करते हैं। इनमें कुछ किसी प्रसंभाव्य प्रवृत्ति को मानकर चलते हैं और उसे हटाने के लिए पहले आँकड़ों (के लघुगणक) में अंतर करते हैं।

अधिकांश लेखक विकास और व्यापार चक्र घटकों का प्रतिनिधित्व करने के लिए हॉड्रिक–प्रेस्कॉट फिल्टर के रूप में जानी जाने वाली तकनीक का ही उपयोग करते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) व्यापार चक्र पर केन्जियन दृष्टिकोण का संक्षिप्त विवरण दें।

.....

.....

.....

.....

2) गुणक और त्वरक के बीच परस्पर क्रिया के मॉडल के माध्यम से संतुलन आय ज्ञात करें।

.....

.....

.....

.....

3) आर्थिक शृंखलाकी अनुरूपता और समय का क्या अर्थ है? स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

4) पश्चगामी संकेतक क्या महत्व है? स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

11.8 सारांश

इस इकाई में हमने तीन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है, यथा व्यापार चक्रों के मूल अभिलक्षण, व्यापार चक्रों के परंपरागत सिद्धांत और व्यापार चक्रों का मापन। व्यापार चक्र को किसी रुझान से भिन्न आभासी विचलन के रूप में लिया जाना चाहिए। कुछ आर्थिक चर कुल उत्पादन के साथ ही चलते हैं। किसी भी आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था के लिए उत्पादन के समय–पथ की जाँघ किए जाने से ज्ञात होता है कि उत्पादन में दीर्घकालिक विकास–पथ के आसपास उतार–चढ़ाव होता है। रुझान के आसपास ये उतार–चढ़ाव ही हम प्रायः व्यापार चक्र के रूप में देखते हैं। उतार–चढ़ाव आमतौर पर अनियमित रूप से और भिन्न–भिन्न आयाम एवं अवधि के होते हैं। फिर भी इन उतार–चढ़ावों का एक बहुत ही नियमित अभिलक्षण चरों के एक साथ चलने का तरीका है।

व्यापार चक्र अपने चार चरणों से पहचाना जाता है, यथा विस्तार, अवमंदन, संकुचन और समुत्थान।कुछ महत्वपूर्ण गणितीय सिद्धांत जो व्यापार चक्रों की इन विशेषताओं की व्याख्या करते हैं, इस प्रकार हैं–a) केन्जियन सिद्धांत – जिसने दर्शाया कि कुल प्रभावी माँग के स्तर में परिवर्तन आय, उत्पादन एवं नियोजन के स्तर में उतार–चढ़ाव लाते हैं; b) व्यापार चक्र का सैमुएलसन मॉडल – जिसने यह सिद्ध किया कि यह गुणक एवं त्वरक के बीच अंतर्क्रिया ही है जो आर्थिक गतिविधि में चक्रीय उतार–चढ़ाव को जन्म देती है; और c) व्यापार चक्र का राजनीतिक सिद्धांत – जो यह बताता है कि व्यापार चक्र किसी लोकतंत्र में चुनावों का आवधिकता का परिणाम होते हैं, जो कि सरकारों को चुनाव से पहले सार्वजनिक निवेश बढ़ा देने और बाद में इसमें कटौती कर देने के लिए प्रेरित करते हैं।

नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च (NBER) सन 1940 के दशक में बर्न्स और मिशेल द्वारा तैयार किए गए व्यापार चक्र की कारगर परिभाषा का उपयोग अमेरिकी व्यापार चक्र की पहचान करने और उसके तिथि–निर्धारण के लिए करता है। ये तिथियाँ शासकीय, शैक्षिक एवं व्यापारिक विश्लेषकों द्वारा व्यापक रूप से स्वीकार की जाती हैं। व्यापार चक्र के शोध में सामने आने वाली मुख्य समस्या है – समग्र आर्थिक गतिविधि के किसी एकल यथेष्ट रूप से दीर्घ एवं सुसंगत मापदंड का अभाव।

उक्त ब्यूरो (NBER), इसीलिए, किसी भी व्यापार चक्र की तिथि के लिए किसी एक की बजाय बड़ी संख्या में व्यापक संकेतकों के साक्ष्य पर निर्भर करता है।

इन चरों में परिमाण एवं मूल्य, शेयर एवं प्रवाह, उत्पादन एवं निवेश, वास्तविक मौद्रिक एवं वित्तीय चर शामिल होते हैं। इन चरों के समय एवं आयाम का प्रयोग इन्हें अग्रणी, पश्चगामी और संपाती संकेतकों में समूहबद्ध करने के लिए किया जाता है।

निष्कर्षतः व्यापार चक्र हमारी पाठ्य पुस्तक में बने किसी वक्र के साथ चलना मात्र नहीं होता। इसका अर्थ होता है – लोगों के लिए नई नौकरियाँ, या उनका नुकसान। यही नई आय होता है, या फिर उसकी हानि। यही स्कूलों, अस्पतालों और सड़कों जैसे नए बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिए धन होता है। व्यापार चक्र की कहानी प्रगति और व्यापक विफलताओं एवं त्याग का वृत्तांत होती है। अवमंदन के प्रभाव विशुद्ध रूप से आर्थिक दायरे से परे होते हैं और समाज के सामाजिक ताने–बाने को भी प्रभावित करते हैं। गृह क्लेश, गरीबी, बेरोजगारी, धन संबंधी अपराध आदि मंदी के दौरान बढ़ने लगते हैं।

11.11 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) व्यापार चक्र में बड़ी संख्या में आर्थिक गतिविधियों में विस्तार और संकुचन के आवर्ती वैकल्पिक चरण होते हैं।

2) महत्वपूर्ण अभिलक्षणों के लिए पाठांश 11.2 का संदर्भ लें।

3) पाठांश 11.3 में दिए गए चरणों का वर्णन करें। साथ ही, चित्र 11.1 की व्याख्या भी करें।

बोध प्रश्न 2

1) कीन्स ने कुल माँग में उतार–चढ़ाव पर बल दिया। निवेश गुणक ने उत्पादन में परिवर्तन के परिमाण को बढ़ा दिया। पाठांश 11.4.1 का संदर्भ लें।

2) चित्र 11.2. चित्र की व्याख्या करें। समीकरण (11.1), (11.2) और (11.3) के माध्यम से समीकरण (11.4) तक पहुँचने के लिए संतुलन आय ज्ञात करें। पाठांश 11.4.2 का संदर्भ लें।

3) अनुरूपता वह संगति है जिसके साथ श्रृंखला व्यापार चक्रों के अनुरूप होती है। समय–निर्धारण उस स्थिरता को संदर्भित करता है जिसके साथ किसी समय श्रृंखला का वर्तन बिंदु संदर्भ आँकड़ों के साथ आगे बढ़ा हो, पिछड़ा हो या फिर स्थूल रूप से मेल खाता हो।

4) पाठांश 11.6.2 का संदर्भ लें। पश्चगामी संकेतक का महत्व इस तथ्य की पुष्टि करने की क्षमता में देखा जा सकता है कि कोई प्रतिमान जना ले रहा है। नियोजन सबसे लोकप्रिय पश्चगामी संकेतकों में से एक है। यदि नियोजन दर बढ़ रही है तो यह इंगित करता है कि अर्थव्यवस्था खराब प्रदर्शन कर रही है।